ACKNOWLEDGEMENT

We sincerely express our gratitude to **"Teerthdham Manglayatan"** from where we have sourced **"Badhte Charan FirstStandard"**.

"Teerthdham Manglayatan" have taken due care, However, if you find any error, for which we request all the reader to kindly inform us at info@vitragvani.com or to Info@Manglayatan.com **"Teerthdham Manglayatan"**

हमारे जीवन शिल्पी
धर्मपिता
पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के
कर कमलों में सविनय समर्पित

हम हैं आपके,
नन्हें-मुन्ने ज्ञायक

२

वन्दना

करूँ नमन मैं अरहन्तदेव को।
करूँ नमन मैं सिद्ध देव को।
करूँ नमन मैं आचार्यदेव को।
करूँ नमन मैं उपाध्यायदेव को।
करूँ नमन मैं सर्व साधु को।

३

हमारे देव - अरहन्त भगवान

णमो अरहंताणं

यह अरहन्त भगवान हैं।
अरहन्त भगवान, शरीरसहित हैं।
अरहन्त भगवान, जन्म-मरण आदि दोषों से रहित हैं।
अरहन्त भगवान, वीतरागी और सर्वज्ञ हैं।
अरहन्त भगवान, हमें मुक्ति के मार्ग का उपदेश देते हैं।
ऐसे अरहन्त भगवान को हमारा नमस्कार हो।

४

हमारे साध्य - सिद्ध भगवान

णमो सिद्धाणं

सिद्ध भगवान, शरीररहित हैं।
सिद्ध भगवान को जन्म-मरण नहीं होते।
सिद्ध भगवान, परिपूर्ण सुखी हैं।
सिद्ध भगवान, संसार में लौटकर नहीं आते।
सिद्ध भगवान को जानने से
हमें अपनी आत्मा का ज्ञान होता है।
ऐसे सिद्ध भगवान को हमारा नमस्कार हो।

५

हमारे गुरु - आचार्य भगवान

णमो आइरियाणं

यह आचार्य भगवान हैं।
आचार्य भगवान, समस्त परिग्रहरहित नग्न दिगम्बर होते हैं।
आचार्य भगवान, मुनिसंघ के नायक हैं।
आचार्य भगवान, आत्मानन्द के भोगी होते हैं।
ऐसे आचार्य भगवान को हमारा नमस्कार हो।

६

हमारे गुरु - उपाध्याय भगवान

णमो उवज्झायाणं

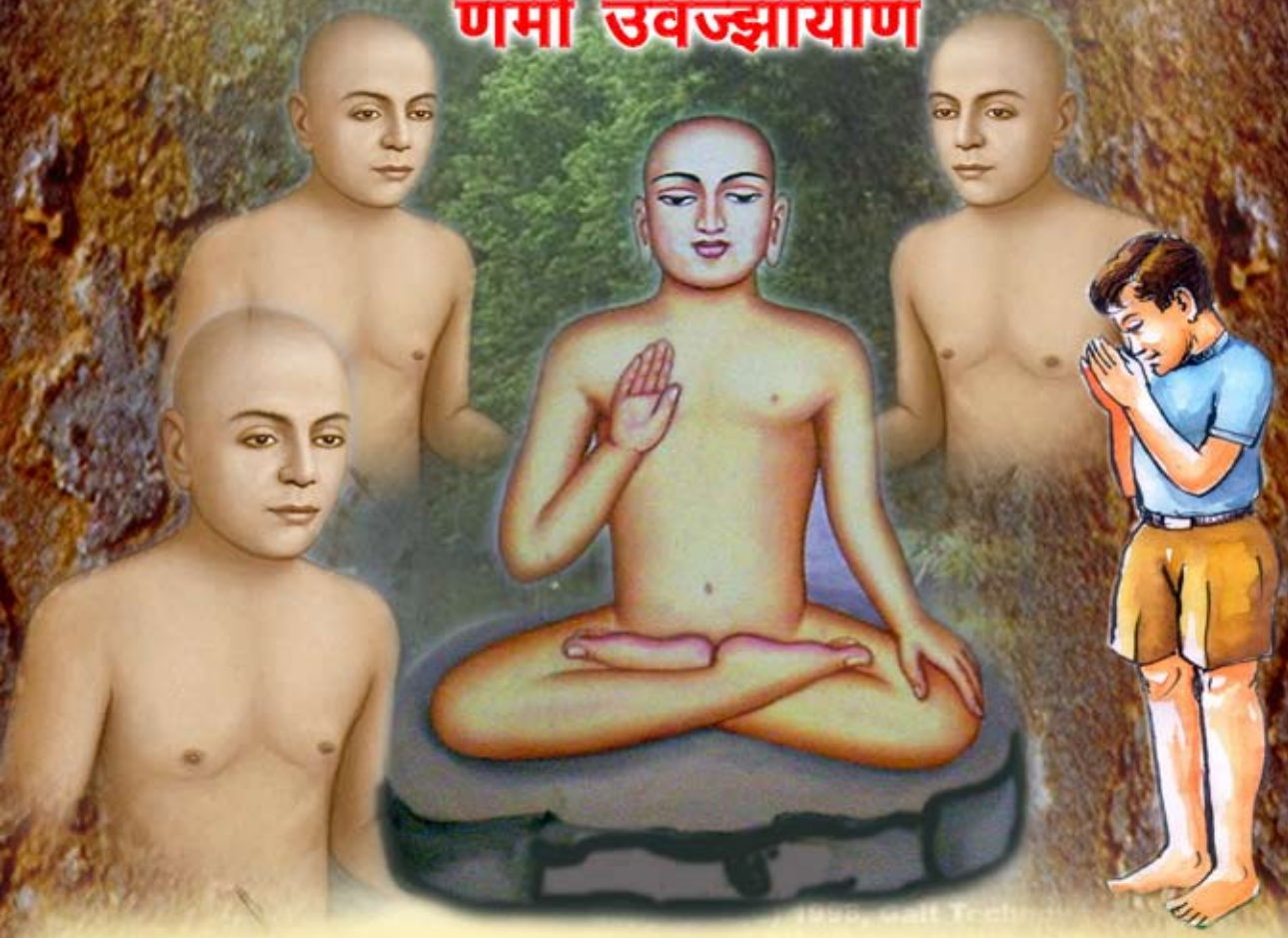

उपाध्याय भगवान, सम्पूर्ण जैन शास्त्रों के ज्ञाता होते हैं।
उपाध्याय भगवान, मुनिसंघ को पढ़ाने के अधिकारी होते हैं।
उपाध्याय भगवान, भव्य जीवों को जिनवाणी का अध्ययन कराते हैं।
उपाध्याय भगवान, अतीन्द्रिय सुख के भोक्ता होते हैं।
ऐसे उपाध्याय भगवान को हमारा नमस्कार हो।

हमारे गुरु - साधु भगवान

णमो लोए सव्व साहूणं

साधु अर्थात् मुनिराज अपने शान्तस्वरूप में लीन हैं।
मुनिराज की शान्त मुद्रा देखकर, क्रोधी सर्प, जंगली बाघ,
चंचल बन्दर और डरपोक खरगौश भी शान्त हो जाते हैं।
मुनिराज हमें आत्मा का स्वरूप समझाते हैं।
ऐसे सभी मुनिराजों को हमारा नमस्कार हो।

आओ बालकों ! आज हम जैनधर्म में बताये गये छह द्रव्यों के नाम सीखें।
ये छह द्रव्य, अरहन्त भगवान ने केवलज्ञान में देखे हैं और कहे हैं -

इस विश्व में छह जाति के द्रव्य हैं -

(१) जीव, (२) पुद्गल, (३) धर्मास्तिकाय,
(४) अधर्मास्तिकाय, (५) आकाश और (६) काल।

भगवान महावीर पावापुर से निर्वाण को प्राप्त हुए। उन्होंने कार्तिक कृष्ण अमावश्या के दिन सिद्धदशा प्राप्त की, इसलिए स्वर्ग से इन्द्रों ने आकर दीपों का प्रकाश कर, उनका निर्वाण महोत्सव मनाया। दीपावलीपर्व अज्ञान अन्धकार को नाश कर, ज्ञानप्रकाश प्रगट करने की प्रेरणा देता है।

नन्नें-मुन्ने ज्ञायक हम...

पाँच बजे उठते हैं हम,

छह बजे हम नहाते हैं,

११

सुन्दर साफ पहनकर कपड़े,

बजे सात हम मन्दिर जाते,

१२

करें नाश्ता आठ बजे हम,

नौ बजे जाते हम स्कूल,

करते होमवर्क तीन बजे,

चार बजे हम खेलें खेल

रात्रि पूर्व हम भोजन करते,

सात बजे फिर पढ़ते हम,

नौ बजे करें धर्म की चर्चा,

फिर, दश बजे सो जाते हम।

१६

तत्त्व

गुरुजी : बच्चों बताओ, तत्त्व कितने होते हैं ?
बच्चे : गुरुजी ! आपने कल तत्त्व सात बताये थे।
गुरुजी : आज सभी बच्चे अपनी नोटबुक में सातों तत्त्वों के नाम लिखें।

जिनमन्दिर की सीढी चढ़ते समय तीन बार - निःसही, निःसही, निःसही तथा मन्दिरजी में विराजमान सर्व जिनेन्द्र भगवान की जय बोलकर प्रवेश करना चाहिए।

निःसही का अर्थ यह है कि मैं भगवान के दर्शन व पूजन के समय संसार सम्बन्धी सर्व विचारों का त्याग करता हूँ।

तत्पश्चात् भगवान के सामने
हाथ जोड़कर...
ॐ जय जय जय,
नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु
णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं।

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।...

इत्यादि पाठ, स्तुति बोलकर भगवान को नमस्कार करना चाहिए।
भगवान की बेदी की तीन प्रदक्षिणा देना चाहिए।
इस प्रकार जिनेन्द्रदर्शन करके जिनवाणी सुनना चाहिए और जिनवाणी में बताये अनुसार अपनी आत्मा को समझकर, भगवान बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

१९ तीर्थंकर और भगवान

१. तीर्थंकर चौबीस होते हैं।
भगवान अनन्त होते हैं।
२. सभी तीर्थंकर, भगवान होते हैं।
सभी भगवान, तीर्थंकर नहीं होते।
३. तीर्थंकर की दिव्यध्वनि होती है।
भगवान की दिव्यध्वनि अनिवार्य नहीं है।

४. तीर्थंकर के चिह्न और समवसरण होता है।
भगवान के चिह्न और समवसरण नहीं होता।
५. तीर्थंकर हुए बिना भी मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।
भगवान हुए बिना मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता।
६. तीर्थंकर बनना पुण्य का फल है।
भगवान बनना धर्म का फल है।

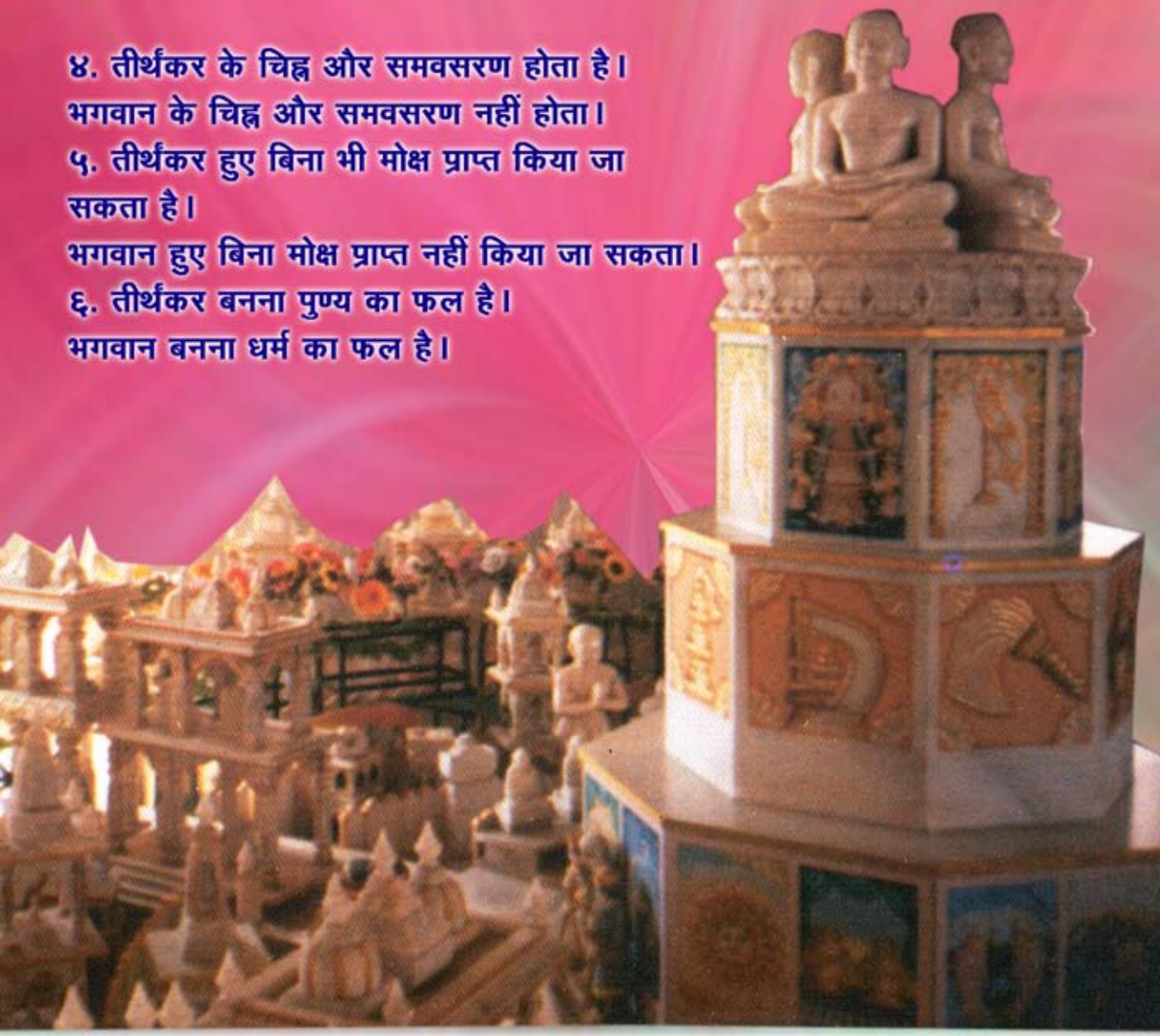

२०

जन्मदिन की कहानी

आज `जिन' नामक बालक का जन्म दिवस है। यह बालक जन्म से जैन और संस्कारी है; इसलिए माता-पिता को प्रणाम करता है और जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आशीर्वाद माँगता है।

२१

बेटा जिन ! आज तुम्हारा जन्मदिवस है - ऐसा कहा जाता है। वास्तव में तो तुम अजर-अमर आत्मा हो। आत्मा का जन्म-मरण नहीं होता। शरीर के मिलने को जन्म और शरीर के छूटने को मरण कहा जाता है।

माताजी ! मुझे अपने जन्मदिन पर क्या करना चाहिए ?

सुन बेटा जिन ! आज तुम अपने जन्मदिवस के अवसर पर कुछ अच्छे नियम लो - (१) मैं प्रतिदिन जिनमन्दिर जाकर भगवान के दर्शन करूँगा, (२) भगवान की पूजन करूँगा, (३) प्रतिदिन आधा घण्टा शास्त्र सुनूँगा और (४) अपनी आत्मा की पहिचान करने का प्रयास करूँगा।

माताजी! मैं आज आपके बताये सभी नियम लेता हूँ। मैं अभी जिनमन्दिर जाकर, भगवान का दर्शन-पूजन करके, स्वाध्याय करूँगा। परन्तु...

माता :- हाँ, हाँ बेटा जिन ! कहो क्या कहना चाहते हो ?

जिन :- माता ! मेरे सहपाठी मित्र तो धूमधाम से अपना जन्मदिन मनाते हैं, होटल भी जाते हैं। क्या ऐसा नहीं करना चाहिए ?

माता :- हाँ पुत्र ! हमें तो जन्म-मरण से मुक्त होकर भगवान बनना है। होटल जाना तो पाप है। जन्मदिन की सच्ची सफलता भगवान बनने का प्रयास करना है।

जिन :- माता ! जन्म-मरण से मुक्त होने के लिए क्या करना चाहिए ?

माता :- जन्म-मरण से मुक्त होने के लिए अपनी आत्मा की पहिचान करनी चाहिए। जीव, अपनी आत्मा को नहीं पहिचानने से ही जन्म-मरण के दुःख भोग रहा है।

जिन :- ठीक है माता ! मैं भी अपनी आत्मा को पहिचान कर, भगवान बनूँगा।

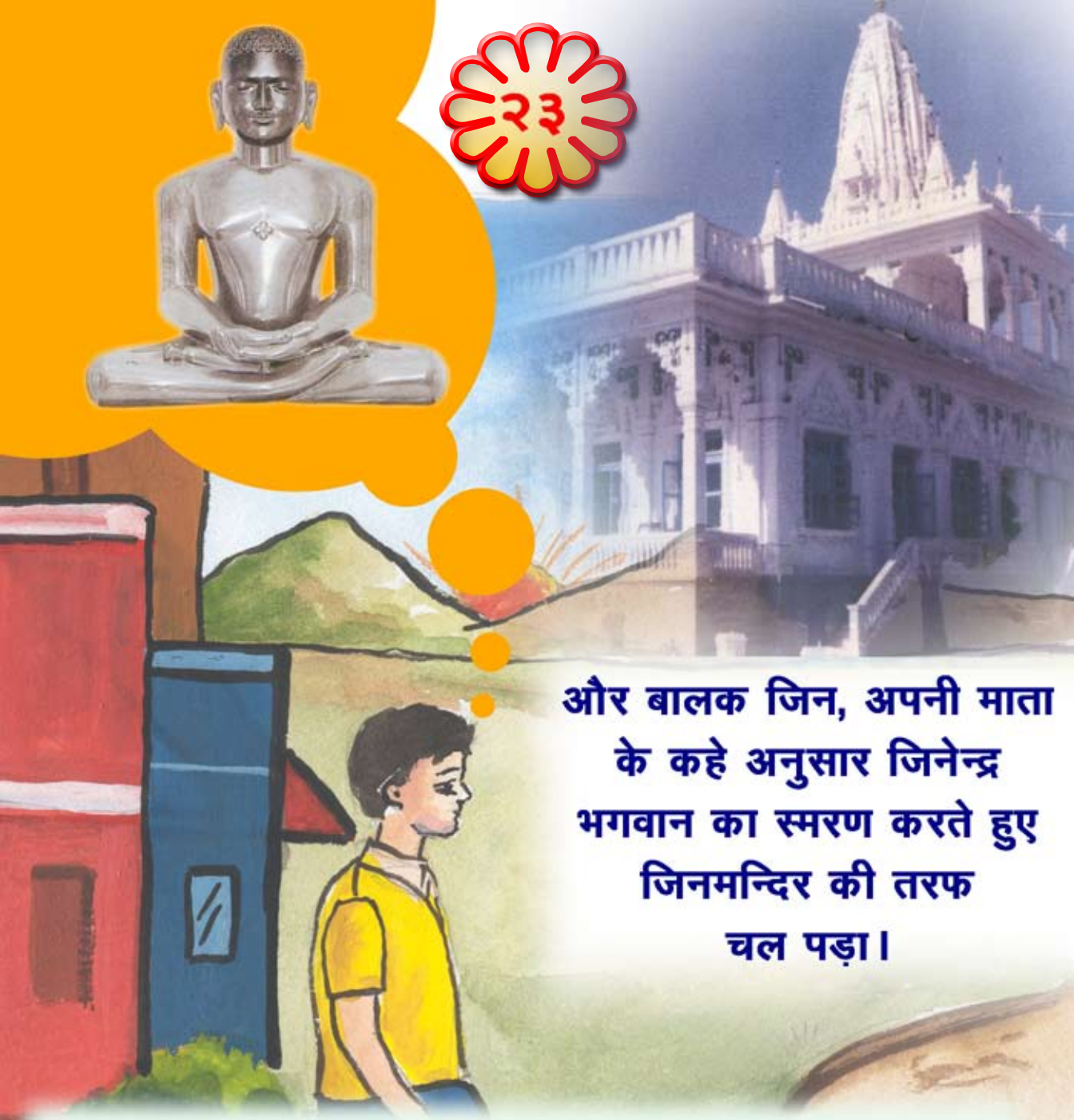

प्यारे बच्चों ! तुम भी बालक जिन की तरह ही अपनी आत्मा को समझने का प्रयत्न करना। अपनी आत्मा को समझने के लिए प्रतिदिन जिनमन्दिर जाना, स्वाध्याय करना, पूजन करना और एक दिन अपनी आत्मा को समझकर भगवान बन जाना।

मेरे मन में है विश्वास...

हम होंगे ज्ञानवान, हम होंगे ज्ञानवान,
हम होंगे ज्ञानवान, एक दिन,
हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे ज्ञानवान, एक दिन।

हम धरेंगे आतम-ध्यान, हम धरेंगे आतम-ध्यान,
हम धरेंगे आतम-ध्यान, एक दिन,
हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम धरेंगे आतम-ध्यान, एक दिन।

हम भी बनेंगे भगवान, हम भी बनेंगे भगवान,
हम भी बनेंगे भगवान, एक दिन,
हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम भी बनेंगे भगवान, एक दिन।